International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 04-07-2022; Accepted: 19-07-2022; Published: 04-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 94-99

महाविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों की परिवारोंमुखी जीवनशैली और परिवार के प्रति अभिवृत्ति मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

अंजू चौधरी
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
आज का युवा तेजी से बदलते समाज में रह रहा है, यह बदलाव ना केवल भौतिक सुख–सुविधाओं के रूप में वैज्ञानिक है बल्कि सामाजिक भी है। सामाजिक बदलावों के अंतर्गत परिवार के प्रति उनकी भूमिका और दायित्व अहसास में भी अंतर आने लगे है। वैचारिक रूप से और स्वयं को स्वतन्त्र महसूस करने के लिए वे अपने खुद के मूल्यों पर कार्य करना पसंद करते है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शोध सर्वेक्षण विधि के द्वारा महाविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों की परिवारोंमुखी जीवनशैली और परिवार के प्रति अभिवृत्ति मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इसके लिये राजस्थान राज्य के झुंझुनू जिले के दो राजकीय महाविद्यालयों में पढ़ रहे 461 विद्यार्थियों का चयन किया गया। शोध उपकरण के रूप में मानकीकृत उपकरण और स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। इसमें मानकीकृत उपकरण से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाप विचलन और 'टी' परीक्षण तथा स्वनिर्मित उपकरण से प्राप्त आंकड़ों के सम्पूर्ण समष्टि पर विशेष उत्तर का प्रतिशत भार प्राप्त किया गया। परिवारोन्मुखी जीवनशैली के परिणाम दर्शाते है कि छात्रों की तुलना में छात्राएं अधिक परिवारोन्मुखी है।

मूल शब्द: महाविद्यालय, विद्यार्थी, परिवारोन्मुखी जीवनशैली, प्रश्नावली

प्रस्तावना
सामाजिक परिवर्तन ही सामाजिक व्यवस्था को बदलने के लिए जिम्मेदार होते है, जिनके चलते सामाजिक व्यवस्थाये नित नए रूप लेती है। यह परिवर्तन समाज में रहने वाले लगभग प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पक्षों को भी प्रभावित करने की क्षमता रखते है। धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, शिक्षा व्यवस्था, वैवाहिक नियम और सामाजिक प्रतिमान सामाजिक परिवर्तनों के अंतर्गत प्रभावित होने वाले मुख्य पक्ष है (Marvin & Johnson, 2007), जो अंततः सामाजिक अंतः क्रिया या सामाजिक संबंधों को परिवर्तित कर देते है।
मैक्स वेबर (1964) आदि समाज–वैज्ञानिकों ने अपने 'सामाजिक क्रिया सिद्धान्त' (थिअरी ऑफ सोशल ऐक्शन) सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति के बारे में गहन विचार किया है। कुछ अन्य विद्वानों जैसे मैकाइवर एवं पेज, क्युबर, रोज, सिमेल और ग्रीन ने भी समाजशास्त्र को सामाजिक संबंधों के क्रमबद्ध अध्ययन के रूप में परिभाषित किया है । मैकीवर एवं पेज (1949) के अनुसार "समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के विषय में शामिल है", सम्बन्धों के इस जाल को ही इन्होने 'समाज' कहा है। क्युबर (1963) के अनुसार "समाजशास्त्र को मानव सम्बन्धों के वैज्ञानिक ज्ञान के ढांचे" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। अर्नोल्ड (1962) के अनुसार "समाजशास्त्र मानव सम्बन्धों का विज्ञान है"। सिमेल (1964) के अनुसार "समाजशास्त्र मानवीय अंतर्संबंधों के स्वरूपों का विज्ञान है"। इसी भांति ग्रीन (1968) के अनुसार "समाजशास्त्र मनुष्य का उसके समस्त सामाजिक सम्बन्धों के रूप में समन्वय करने वाला और सामान्य अनुमान निकालने वाला विज्ञान है"। सामाजिक संबंधों के अध्ययन के रूप में समाजशास्त को परिभाषित करने वाली दी गयी इन सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि समाजशास्त की मुख्य विषयवस्तु व्यक्तियों में पाए जाने वाले सामाजिक सम्बन्ध ही होते है।
विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के द्वारा सामाजिक वातावरण में व्यक्तियों के बदलते हुए क्रियाकलापों और व्यवहारों के अवलोकन तथा जीवन शैली से संबंधित किए गए अध्ययनों द्वारा कई विशिष्ट जीवन शैलियों को पहचाना गया है जिन्हें प्रमुख रूप से छरू वर्गो में निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया हैः

स्वास्थ्य केंद्र जीवनशैली (Health Conscious Lifestyle): इस प्रकार की जीवनशैली से तात्पर्य है जब कोई व्यक्ति सदैव स्वयं को शारीरिक रूप से हष्ट पुष्ट रखने के लिए विचारशील होता है। शारीरिक स्वच्छता, पोषकपूर्णता, रोगमुक्तता और आकर्षक शरीर पर उसका दृष्टिकोण अधिक रहता है।

अकादमिक उन्मुख जीवनशैली (Academic Oriented Lifestyle): इस प्रकार की जीवनशैली में व्यक्ति अधिकांशतया अपनी अकादमी क्रियाओं में ही संलग्न रहता है ।

व्यवसाय उन्मुख जीवनशैली (Career Oriented Lifestyle): इस प्रकार की जीवनशैली में व्यक्ति सदैव अपने व्यवसाय के बारे में अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करने हेतु जिज्ञासु रहता है।

परिवार उन्मुख जीवनशैली (Family Oriented Lifestyle): इस प्रकार की जीवनशैली में व्यक्ति प्रमुख रूप से अपने परिवार के संग–संपर्क में रहता है और अपने दैनिक जीवन से जुड़ी क्रियाओं को अपने परिवार के साथ बांटता है।

सामाजिक उन्मुख जीवनशैली (Socially Oriented Lifestyle): इस प्रकार की जीवनशैली में व्यक्ति हमेशा समाज के लिए भलाई करता है और सामाजिक क्रियायों में भाग लेता है।

चलन संबंधित जीवनशैली (Trend Oriented Lifestyle): इस प्रकार की जीवन शैली में व्यक्ति हमेशा नवीन प्रकार के चलन को अपनाता है और बदलते हुए चलन के अनुसार अपने आप को शीघ्रता से बदलता जाता है।
इसी के अंतर्गत वर्तमान शोध पत्र में राजस्थान राज्य के झुंझुनू जिले के दो राजकीय महाविद्यालयों (1) राजकीय टिबड़ेवाल कन्या महाविद्यालय तथा (2) राजकीय मोरारका स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पढ़ रहे विद्यार्थियों के 'परिवारोन्मुखी जीवनशैली' का अध्ययन किया गया ।
प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैः

1. महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र–छात्राओं की परिवारोन्मुखी जीवनशैली, उसमें आ रहे बदलावों और उनके प्रभावों को जानना ।
2. महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र–छात्राओं की बदलती परिवारोन्मुखी जीवनशैली का सामाजिक सम्बन्धों पर पड़ रहे सकारात्मक–नकारात्मक प्रभावों को जानना ।

परिकल्पनाः महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की परिवारोंमुखी जीवनशैली और परिवार के प्रति अभिवृत्ति मूल्यों में कोई अंतर नहीं है

शोध पद्धति
अनुसंधान विधिः शोध अध्ययन की समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

न्यदर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के झुंझुनू जिले के दो राजकीय महाविद्यालयों (1) राजकीय टिबड़ेवाल कन्या महाविद्यालय तथा (2) राजकीय मोरारका स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पढ़ रहे कुल 461 विद्यार्थियों को याद्रच्छिक विधि से चुना गया, इनमें 223 छात्र तथा 236 छात्राएं थी।

अध्ययन के चरः प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न चर हैः

स्वतंत्र चरः जीवनशैली

आश्रित चरः लिंग, अभिरुचि, पारिवारिक स्थिति

जीवनशैलीः
जीवनशैली अंग्रेजी भाषा के शब्दों Life और Style से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है जीवन को आगे बढ़ाना ('Way' one leads his/her life) । जीवनशैली "किसी व्यक्ति, समूह या संस्कृति के रूचि, राय, व्यव्हार तथा व्यव्हार के झुकाव की दिशा को सम्मिलित रूप से व्यक्त करता है साथ ही जीवनशैली जीवन के एक तरीके से व्यक्ति के मूल्यों और दृष्टिकोण को दर्शाता है" (Lynn & Angeline, 2011)।
जीवनशैली शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऑस्ट्रियन मनोविश्लेषणवादी मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड ऐडलर (1870–1937) द्वारा किया गया था । इनके अनुसार "एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर श्रेष्ठता प्राप्त करने या अधिकार जमाने का प्रयास करता है और उन प्रयासों के दौरान उसके द्वारा अपनाये जाने वाले अनुकूलनों और प्रक्रियाओं को ही जीवनशैली के रूप में जाना जाता है (Naikoo and Pathak, 2020)।
शोध उपकरणरू वर्तमान शोध में शोध के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मानकीकृत उपकरण के रूप में एस.के. बावा और एस. कौर (2012) द्वारा निर्मित 'लाइफस्टाइल स्केल प्रश्नावली' का उपयोग किया गया, जबकि स्वनिर्मित उपकरण के अंतर्गत विषय–विशेष के ज्ञाताओं से चर्चा करते हुए उत्तरदात्रियों से शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पूछे जाने वाले प्रश्नों को तैयार किया गया।

सर्वेक्षण विधिः अध्ययन के लिए सर्वप्रथम महाविद्यालय प्रशासन (प्रधानाचार्य) से अनुमति लेकर शोध के लिए चयनित विद्यार्थियों से संपर्क साधा गया । विद्यार्थियों को निर्देश दिए गए कि शोध के अंतर्गत सर्वे के लिए प्रश्न–पत्र भरने के लिए आपका चयन किया गया है, जो आपकी परिवारोन्मुखी जीवनशैली से सम्बंधित है और उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता है कि वह इस सर्वे में भाग ले या नहीं । विद्यार्थियों के सर्वे पूर्ण कर लिए जाने के उपरांत शोधकर्ता के द्वारा सभी प्रश्नावलियों को इकठ्ठा करके प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को यह जांचने के लिए देखा कि किसी प्रश्न के उत्तर को उत्तरदात्रियों ने भूलवश छोड़ तो नहीं दिया ।

तथ्यों का संपादन, सारणीयन तथा सांख्यिकीय प्रविधियांः उत्तरदात्रियों के द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों को अच्छे से देखकर उन्हें उनके प्रतिक्रियात्मक विचारों के आधार पर साधारण सारणियों के रूप में प्रदर्शित किया गया । इसी के साथ शोधकार्य में प्राप्त समंको को व्यवस्थित एवं विश्लेषित करके निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु शोध उपकरण विशेष के लिए निम्न सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कियाः

मानकीकृत उपकरण हेतुः मध्यमान, प्रमाप विचलन और 'टी' परीक्षण ।

स्वनिर्मित उपकरण हेतु: किसी प्रश्न के प्रत्युत्तर में एक जैसे जवाबों के लिए उत्तरदात्रियों की कुल संख्या और सम्पूर्ण समष्टि पर विशेष उत्तर का प्रतिशत भार ।

परिणाम और चर्चा:

तालिका 1: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र–छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'परिवारोन्मुखी जीवनशैली' को प्रदर्शित करती सारिणी

समूह	संख्या (N)	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SEM	'टी'–मूल्य	सार्थकता स्तर
छात्र	223	33.72	4.19	0.2806	13.06	< 0.0001
छात्राए	238	38.62	3.86	0.2502		

Df = N1 + N2 – 2 = 223 + 238 – 2 = 459
0.05 स्तर पर 'टी' का अपेक्षित मूल्य = 1.96 (Z score 1.96@95% confidence level)
0.01 स्तर पर 'टी' का अपेक्षित मूल्य = 2.58 (score 2.57@99% confidence level)
0.001 स्तर पर 'टी' का अपेक्षित मूल्य = 3.30 (Z score 3.29@99.9% confidence level)

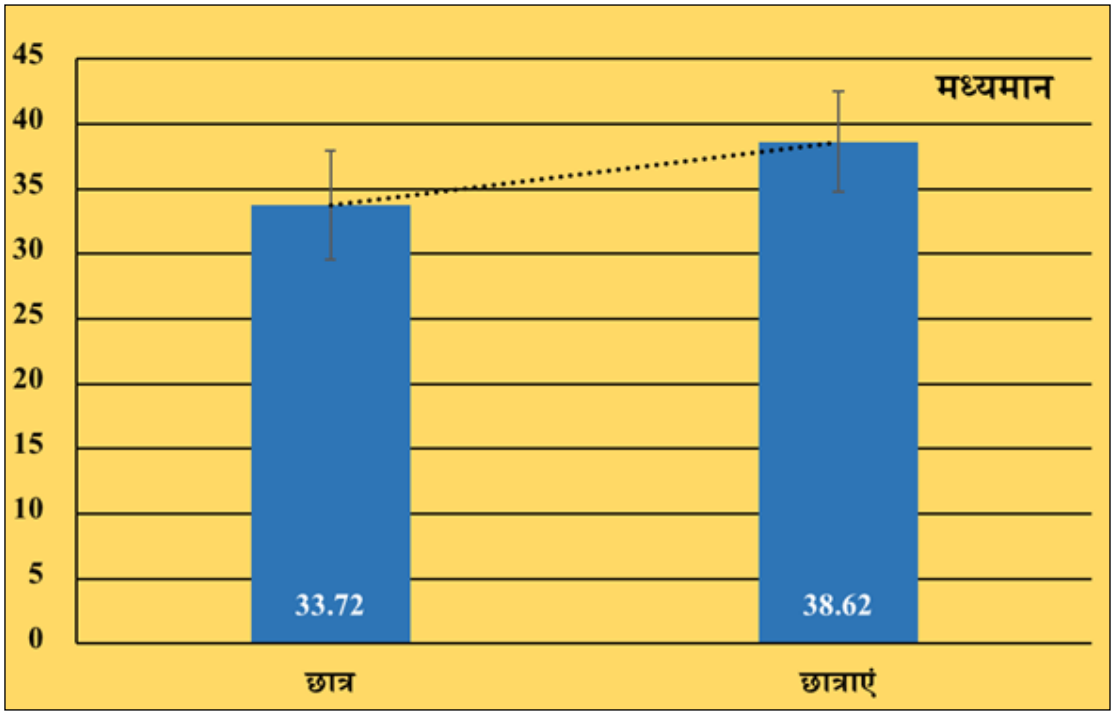

चित्र 1: महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र–छात्राओं की जीवन शैली के आयाम 'परिवारोन्मुखी जीवनशैली'

उपरोक्त सारिणी महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'परिवारोन्मुखी जीवनशैली' को प्रदर्शित करती है । 'टी' तालिका में df = 459 के लिए 0.05, 0.01 और 0.001 स्तरों पर 'टी' का मान क्रमशः 1.96, 2.58 और 3.30 है । शोध में प्राप्त आकड़ों की सांख्यिकी गणना करने पर 'टी' का मान 13.06 प्राप्त हुआ, जो इन तीनों ही स्तरों से अधिक है, इसका अर्थ यह है कि महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों और छात्राओं की जीवनशैली के आयाम 'परिवारोन्मुखी जीवनशैली' में अत्यधिक सार्थक असमानताएं विद्यमान है । सारिणी के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि छात्रों और छात्राओं दोनों के समूहों के मध्यमान क्रमशः 33.72 और 38.62 है, जिसमें छात्राओं का मान छात्रों के मान से 4.90 अधिक है, इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि छात्रों की तुलना में छात्राएं अधिक परिवारोन्मुखी है ।

तालिका 2: आप कौन सी परिवार प्रणाली को बेहतर मानते है

	संयुक्त परिवार	एकल परिवार	कुल
छात्र	171 (76.68%)	52 (23.31%)	223 (100%)
छात्रा	187 (78.57%)	51 (21.42%)	238 (100%)
कुल	358 (77.65%)	103 (22.34%)	461 (100%)

उपरोक्त सारणी के अनुसार कुल 461 विद्यार्थियों में से 358 (77.65%) विद्यार्थी संयुक्त परिवार प्रणाली को बेहतर मानते है सारणी में दिए गए डाटा का लिंगवार अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि संयुक्त प्रणाली को बेहतर मानने वालों में छात्राओं (78.30%) का प्रतिशत छात्रों (76.76%) की तुलना में अधिक है ।

तालिका 3: बेटा या बेटी के बारे में आपकी क्या राय है

	बेटा होना ज्यादा अच्छा है	बेटी होना ज्यादा अच्छा है	दोनों ही समान है	कुल
छात्र	0 (0.00%)	2 (0.89%)	221 (99.10%)	223 (100%)
छात्रा	0 (0.00%)	4 (1.68%)	234 (98.31%)	238 (100%)
कुल	0 (0.00%)	6 (1.30%)	455 (98.69%)	461 (100%)

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि कोई भी विद्यार्थी इस तथ्य से सहमत नहीं है कि परिवार में बेटे का जन्म होना ज्यादा अच्छा है साथ ही साथ केवल बेटी होना ज्यादा अच्छा है इस तथ्य से सहमती दर्शाने वाले विद्यार्थियों की संख्या मात्र 4 (1.39%) ही है जबकि अधिकांश विद्यार्थियों का (98.61%) यही मानना है कि परिवार में बेटा या बेटी दोनों ही समान है । सारिणी में दिए गए डाटा का लिंगवार अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि इस तथ्य के प्रति छात्रों (98.99%) और छात्राओं (98.41%) ने लगभग एक समान ही सहमती दर्शायी है ।

तालिका 4: आप दहेज लेने और देने की इच्छा रखते है

	हाँ	नहीं	कुल
छात्र	223 (100%)	0	223 (100%)
छात्रा	238 (100%)	0	238 (100%)
कुल	461 (100%)	0	461 (100%)

उपरोक्त सारिणी के अनुसार सभी 461 विद्यार्थी जिसमें 223 छात्र तथा 238 छात्राएं शामिल है, का यह मत है कि वे दहेज लेने और/या देने में विश्वास नहीं रखते । सर्वे में भाग लेने वाले किसी भी विद्यार्थी के द्वारा दहेज लेने या देने में अपनी सहमति नहीं दर्शाई थी।

तालिका 5: क्या परिवार के लिए आप अपने उन्नति या भविष्य को ताक पर रख सकते है

	हाँ	नहीं	कुल
छात्र	178 (79.82%)	45 (20.17%)	223 (100%)
छात्रा	175 (73.52%)	63 (26.47%)	238 (100%)
कुल	353 (76.57%)	108 (23.42%)	461 (100%)

सारणी में दिए गए डाटा का लिंगवार अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि परिवार के प्रति इस प्रकार का स्वार्थत्याग छात्राओं की तुलना में छात्रों में अधिक है जहाँ 79.80%% छात्र इस बात के लिए तैयार है वही 73.54% छात्राएं ही इसके प्रति सहमती दर्शाती है । इसका दूसरा पक्ष यह भी देखा जा सकता है कि छात्राएं अपने भविष्य के प्रति ज्यादा समर्पित है और अपनी उन्नति या भविष्य को सुरक्षित रखने में किसी प्रकार का समझौता करने में विश्वास नहीं दर्शाती।

तालिका 6: आप अपने परिवार में कितने बच्चों के बारे में सोचते है

	1	2	3	कुल
छात्र	43 (19.28%)	168 (75.33%)	12 (5.38%)	223 (100%)
छात्रा	66 (27.73%)	157 (65.96%)	15 (6.30%)	238 (100%)
कुल	109 (23.64%)	325 (70.49%)	27 (5.85%)	461 (100%)

जब विद्यार्थियों से विकल्पों के रूप में सवाल पूछा गया कि भविष्य में वह अपने परिवार में 1, 2 या 3 कितने बच्चों के बारे में सोचते है तो सबसे अधिक जवाब (62.15%) दो बच्चों के लिए प्राप्त हुए, इसके बाद सबसे अधिक जवाब (24. 65%) परिवार में 1 बच्चे के लिए और सबसे कम जवाब (13.19%) 3 बच्चे के लिए प्राप्त हुए । सारिणी में दिए गए डाटा का लिंगवार अवलोकन करने पर भी यही क्रम (सर्वाधिक 2, मध्यम 1 और सबसे कम 3) दिखाई देता है ।

तालिका 7: एक अच्छा परिवार वही है जिसमें पुरुष कमाये और महिला घर के सारे काम करे

	हाँ	नहीं	कुल
छात्र	9 (4.03%)	214 (95.96%)	223 (100%)
छात्रा	5 (2.10%)	233 (97.89%)	238 (100%)
कुल	14 (3.03%)	447 (96.96%)	461 (100%)

सारिणी में प्रदर्शित आंकड़ों से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण निदर्श के कुल 461 विद्यार्थियों में 447 (96.96%) विद्यार्थी इस बात से पूर्णतया असहमत है कि घर में केवल पुरुष ही कमाए और महिला घरेलू कार्यों को संभाले । वर्तमान परिस्थितियों में दोनों को काम करना चाहिये और इसमें भी कोई बुराई नहीं है कि महिला कमाए और पुरुष साथी घर की देखरेख करे । लिंगवार यदि चर्चा करे तो ऐसा मानने वाले छात्रों का मत–प्रतिशत 95.96% (214) था जबकि छात्राओं का मत–प्रतिशत

97.89% (233) था । मात्र 3.03% (14) विद्यार्थी इस बात से सहमत दिखाई दिए हालांकि सहमत छात्रों की संख्या (9) सहमत छात्राओं (5) की संख्या से अधिक थी।

तालिका 8: आपके अनुसार विवाह की सही उम्र क्या होनी चाहिये

	15-18	18-21	21-25	जब तक आत्मनिर्भर ना बन जाये चाहे उम्र 30–35 या उससे अधिक भी क्यों न हो जाये	कुल
छात्र	0	52 (23.31%)	83 (37.21%)	88 (39.46%)	223 (100%)
छात्रा	0	59 (24.78%)	49 (20.58%)	130 (54.62%)	238 (100%)
कुल	0	111 (24.07%)	132 (28.63%)	218 (47.28%)	461 (100%)

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि कोई भी विद्यार्थी 18 वर्ष से पूर्व विवाह करने को सही नहीं मानते । 23.23% छात्र और 24.87% छात्राएं मानती है कि 18 से 21 वर्ष में विवाह करने की सही उम्र होती है, वही 37.37% छात्र और 20. 63% छात्राएं 21 से 25 वर्ष में होने वाले विवाह के प्रति सहमत है । हालाँकि विवाह करने के लिए अधिकांश विद्यार्थियों ने उम्र के बजाय आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता दी। 39.46% छात्र और 54.62% छात्राएं आत्मनिर्भर होने के बाद ही विवाह करना चाहते है ।

तालिका 9: आप किस प्रकार के विवाह को अधिक पसंद करते है

	माता–पिता द्वारा निश्चित किया	प्रेम विवाह	कुल
छात्र	83 (37.21%)	140 (62.78%)	223 (100%)
छात्रा	48 (20.16%)	190 (79.83%)	238 (100%)
कुल	131 (28.41%)	330 (71.58%)	461 (100%)

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि लगभग तीन चौथाई विद्यार्थी प्रेम विवाह को अधिक महत्त्व देते है, इनमें भी छात्राओं का प्रतिशत छात्रों की तुलना में अधिक है । अभिभावक द्वारा निश्चित किये जाने वाले विवाह के लिए जहाँ 37. 37% छात्रों ने सहमती दी वही छात्राओं का प्रतिशत मात्र 20.11% है । आँकड़े दर्शाते है कि 79.83% छात्राएं प्रेम विवाह किये जाने को प्राथमिकता देती है ।

तालिका 10: जीवन साथी को चुने जाने में आप धर्म या जाति को अधिक महत्वपूर्ण समझते है

	हाँ	नहीं	कुल
छात्र	83 (37.21%)	140 (62.78%)	223 (100%)
छात्रा	81 (34.03%)	157 (65.96%)	238 (100%)
कुल	164 (35.57%)	297 (64.42%)	461 (100%)

सारिणी में प्रदर्शित आँकड़े दर्शाते है कि सम्पूर्ण निदर्श के कुल 461 विद्यार्थियों में अधिकांश 64.42% (297) विद्यार्थी मानते है कि जीवन साथी को चुने जाने के लिए धर्म या जाति को अधिक महत्व देना पसंद नहीं करेंगे । लिंगवार 223 छात्रों में से 140 (62.78%) छात्र जीवनसाथी के चयन में धर्म या जाति को अधिक महत्वपूर्ण नहीं समझते जबकि 83 (37.21%) छात्रों के अनुसार जीवनसाथी अपने धर्म या जाति का ही होना महत्वपूर्ण मानते है । वहीं 238 छात्राओं में से 157 (65. 96%) इस प्रश्न के प्रति असहमत रही जबकि 81 (34.04%) छात्राओं ने अपनी सहमति दर्शाते हुए अपने ही धर्म या जाति में विवाह किए जाने को अधिक महत्व दिए ।

तालिका 11: विवाह में पुरुष की आयु महिला से अधिक ही होनी चाहिये

	हाँ	नहीं	कुल
छात्र	158 (70.85%)	65 (29.14%)	223 (100%)
छात्रा	122 (51.26%)	116 (48.73%)	238 (100%)
कुल	280 (60.73%)	181 (39.26%)	461 (100%)

सारिणी में प्रदर्शित आंकड़ों से स्पष्ट है कि इस प्रश्न के प्रति–उत्तरों में छात्राओं ने लगभग बराबर संख्या में सहमति और असहमति दर्शाई वहीं सहमत छात्रों की संख्या असहमत छात्रों की तुलना में दोगुनी से भी अधिक थी। सम्पूर्ण निदर्श के कुल 461 विद्यार्थियों में 60.73% (280) विद्यार्थी मानते है कि विवाह में पुरुष महिला से अधिक आयु वाला ही होना चाहिये वही ऐसा नहीं मानने वालों की संख्या 181 (39.26%) थी। लिंगवार चर्चा करे तो कुल 238 छात्राओं में से सहमत और असहमत छात्राओं का मत–प्रतिशत क्रमशः 51.26% (122) और 48.73% (116) था वहीं कुल 223 छात्रों में से सहमत और असहमत छात्रों का मत–प्रतिशत क्रमशः 70.85% (158) और 29.14% (65) था ।

निष्कर्ष

परिणामों से यह स्पष्ट रूप से इंगित होता है कि छात्राएं, छात्रों की तुलना में अधिक परिवारोन्मुखी है, परिवार के प्रति छात्राएं अधिक भावुक है तथा रिश्तों के प्रति अपनी सजगता और आत्मीयता दर्शाती है । अधिकांश छात्राएं वर्तमान में भी संयुक्त परिवारों को अधिक महत्व देती है । हालांकि यह प्राप्त परिणामों से यह पक्ष भी देखने को मिलता है कि छात्रों की तुलना में छात्राएं अपने भविष्य के प्रति अधिक चिंतित है और अपने भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए पारिवारिक जिम्मेदारियों से समझौता करने के लिए तैयार है। हालांकि इसका दूसरा पक्ष यह भी समझा जा सकता है कि वह ऐसा भविष्य में अपने ही परिवार को सहारा और सुरक्षा देने के लिए कह रहे है, क्योंकि एक प्रश्न के प्रतिउत्तर में छात्राओं ने यह भी माना है कि किसी अच्छे परिवार की परिभाषा में पुरुष और महिला दोनों को बराबर का साथ होना आवश्यक है। चाहे वह घर के कार्य हो या बाहर जाकर कमाना। वे मानती है कि जमाना बदल रहा है और महिलाओं को कमाने के मौके मिल रहे है तो ऐसे में पुरुष साथी को घर के कामों में भी हाथ बँटाने में संकोच नहीं किया जाना चाहिए। अनुसंधान में प्राप्त परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश विद्यार्थी आधुनिक जीवन पद्धति को अपनाते हुए प्रतीत होते है जिसमें धर्म या जातिगत बंधनों के इतर प्रेम–विवाह को अधिक महत्व दिये जाने के साथ–साथ विवाह में आयु–बंधन को भी कोई बाधा नहीं माना।

उपरोक्त परिणाम और व्याख्या से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वर्तमान समय में महाविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों की परिवारोंमुखी जीवनशैली और परिवार के प्रति उनके मानदंडों में परिवर्तन आ रहे है, जिनके चलते परिवारों से उनकी विमुखता को नकारा नहीं जा सकता हालांकि ये सभी प्रभाव वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मिले–जुले है । समाज और परिवार को युवा वर्ग की बदलती जीवनशैली से सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है, जो इस परिवर्तन को परिवार के मूल्यों को महत्व देते हुए अधिक सार्थक बना सकता है ।

संदर्भ

1. Marvin H, Johnson O. Cultural Anthropology. 7th edition, Boston, Pearson, 2007.
2. Weber M. The theory of Social and Economic Organisation. Free Press, 1964.
3. MacIver RM, Page CH. Society: an introductory analysis. London: Macmillan, 1949.
4. Cuber JF. Sociology, 1963.
5. Arnold MR. Sociology. Boston: Houghton Mifflin, 1962.
6. Simmel G. Fundamental problems of sociology. Individual and society. In: WolfKurt. The Sociology of Georg Simmel, New York, 1964, 3-84.
7. Green AW. Sociology: an analysis of life in modern society. McGraw Hill Book Company, New York, 1968, 1014.
8. Lynn RK, Angeline GC. Consumer behavior knowledge for effective sports and event marketing. New York Routledge, 2011.
9. Naikoo FA, Pathak MK. Life style adaptation among professional and nonprofessional students. International Journal of Physical Education] Sports and Health,2020:7(5):96-99.
10. Bawa SK, Kaur S. Manual of The Lifestyle scale, 2012.